बचपन के घर

(पुस्तक के कुछ अंश)

माँ के गुजरने के ५ साल बाद नयनिका अपने घर आयी थी. वो घर जहाँ इतनी चहल पहल हुआ करती थी आज इतना वीरान सा हो गया था .

पांच साल से घर बंद था कोई था भी नहीं इस घर में रहने वाला . एक भाई जो अमेरिका में जा के बस गया और उसको फुरसत भी कह थी वो एक घर के लिए वापस आये. बस एक बार फ़ोन आया उसके पास

"नयनिका, मैं सोच रहा था कि अब गांव जा के ना तुम बसने वाली हो न मैं. उस घर को बेच देते है. मैं तो भारत आ नहीं पाउगा ये काम तुम ही कर लो"। आगे............

माँ के गुजरने के ५ साल बाद नयनिका अपने घर आयी थी. वो घर जहाँ इतनी चहल पहल हुआ करती थी आज इतना वीरान सा हो गया था .

पांच साल से घर बंद था कोई था भी नहीं इस घर में रहने वाला . एक भाई जो अमेरिका में जा के बस गया और उसको फुरसत भी कह थी वो एक घर के लिए वापस आये. बस एक बार फ़ोन आया उसके पास

"नयनिका, मैं सोच रहा था कि अब गांव जा के ना तुम बसने वाली हो न मैं. उस घर को बेच देते है. मैं तो भारत आ नहीं पाउगा ये काम तुम ही कर लो"

कितना आसान था भाई के ये सब बोल जाना की बेच दो . शायद वो बहुत ज्यादा प्रैक्टिकल था नयनिका नहीं .

वो अपने मायके ... अपने बचपन के घर को देख जा रही थी. हर कोने से कोई न कोई याद जुडी थी . कुछ ही दिन तो बचे थे इस घर में फिर ये किसी और का होने वाला था वो पेड़ जिसपर झूले हुआ करते थे वो सुख चुके थे , वो हरसिगार की बेल जिससे माँ गजरे बनती थी वो भी अब वहाँ नहीं थी .

फिर वो माँ के कमरे में गई . उनकी अलमारी अभी भी वैसी की वैसी थी बस एक धूल की मोती सी परत जैम गई थी .

नयनिका ने अलमारी खोली . उस माँ उसमे सडिया अभी भी सलीके से टंगी हुई थी . तभी उसकी नजर माँ की लाल साडी पर गई. ये माँ की शादी की साडी थी इतने सालो से माँ ने इसको सम्हाल

के रखा था . नयनिका ने उस साडी को निकाला उसको अपने ऊपर रखा . उसके आईने में माँ की झलक आयी..... वो भी तो माँ की परछाई ही तो है. उसके आँखों में आंसु आ गए.

अभी दरवाजे पर एक दस्तक हुई . वो चौक गयी .....

फिर वो दरवाजे को और दौड़ पड़ी जैसी वो फिर से बच्ची बन गयी हो

दरवाजे पर तन्मय था .... उसके बचपन का दोस्त. वो दोनों साथ में ही बड़े हुए थे ... फिर जब वो ७- ८ साल था तो उसके पापा शहर चले गए नौकरी कारण क लिए कभी कभी आता था गाँव में छुट्टियों में .

" अरे तुम यहाँ आज कैसे" एक हसी थी पर एक झिझक भी थी. शायद ये बड़े हो जाने का असर था.

" मैं अब गाँव में ही रहता हूं"

"गाँव में. " नयनिका थोड़े अचरज के साथ बोली. तन्मय तो बहुत बड़ा डॉक्टर बन गया था.

" हां दो साल हो गए"

" अचानक गाँव में बसने का कैसे सोचा"

" तुम्हे मेरा सबसे छोटा भाई मनन याद है..."

" हां उसे कैसे भूल सकती हूँ. वो भी यही गाँव में रहता है ना. जब सब शहरो में अपना भविष्य सुधरने जा रहे थे तो उसने गाँव में रुक के खेती करने का निर्णय लिया था. बहुत बहादुर और दृढ़ निश्चय वाला है वो."

"वो इस दुनिंया में नहीं रहा"

नयनिका की तो आँखे फटी रह गयी

"ये कैसे हो गया" बस इतना ही नयनिका बोल पायी

"उसको डेंगू हो गया था. यहाँ बस एक सरकारी अस्पताल है. उनमे भी डाक्टर नाम के लिए आते है . कोई उसकी बीमारी पहचान ही नहीं पाया. जब एक दिन अचानक वो बिहोश हो गया तो वो लोग उसे गाड़ी में ले के शहर निकले. पांच घंटे लग गए शहर पहुंचने में. फिर हॉस्पिटल पहुंचे वो लोग. मनन को एडमिट किया. उसकी हालत बिगड़ती जा रही थी.

उसको वेंटिलेटर पर डाल दिया गया. रात भर में उसके सरे ओरगॉन काम करना बंद कर दिया . वो हम सब को छोड़ के चला गया "

"मैं इतने बड़े अस्पताल में डॉक्टर था फिर भी कुछ नहीं कर पाया उसके लिए"

"उसको तो नहीं बचा पाया पर ऐसा फिर से ना हो इस लिए मैं गाँव वापस आ गया. अब ये ही सपना है हमारे गाँव में एक बड़ा अस्पताल हो जिससे हर छोटी बड़ी बीमारी की लिए गाँव वालो को शहर ना जान पड़े"

"बहुत दुःख है मनन के लिए" नयनिका न आंसू पोछते हुए कहा

"तुम यहाँ कैसे" तंमन्य ने पूछा

"माँ को गुजरे कई साल हो गए तो भैया ने और मैंने सोचा की अब यहाँ का घर बेंच दे. बस उसी काम के लिए आयी थी "

"एक बात बोलू अगर तुम्हे ऐतराज न हो"

"हां बोलो न"

"मैं यहाँ एक बड़ा हॉस्पिटल खोलना चाहता हूँ . अगर तुम चाहो तो मैं यहाँ हॉस्पटल खोल लूँ . अभी घर खरीद तो नहीं पाउगा पर किराया देता रहुगा हर महीने , अगर तुम्हे सही लगे " तन्मय एक साँस में बोल गया

एक मुस्कान नयनिका के चेहरे पर आ गयी. वो तो कभी अपने बचपन का घर बेचना ही नहीं चाहती थी

" मेरे माँ पापा का घर इतने अच्छे काम के लिए इस्तेमाल हो इससे अच्छा और क्या हो सकता है. "

अगली सुबह उसने तन्मय के हॉस्पिटल के लिए पेपर तैयार कराये और सुकून से अपने घर की ओर निकल गयी